ए

सदानीरा

विश्व कविता और अन्य कलाओं की पत्रिका

ग्रीष्म 2018

आ वा जें

अंक-19, वर्ष-6
मई-जून 2018
ISSN 2321-1474

प्रधान संपादक
आग्नेय
संपादक
अविनाश मिश्र

आवरण और प्रथम पृष्ठ : अलबर्ट ड्यूरर
कवियों-लेखकों की तस्वीरें गूगल से

sadaneera.com /Sadaneera

प्रधान कार्यालय :
बी-207, चिनार वुडलैंड,
कोलार रोड, भोपाल-462016
मध्य प्रदेश
फोन : 0755-2424126, 9303139295
agneya@sadaneera.com

संपादकीय संपर्क :
171, गिरधर एंक्लेव,
साहिबाबाद, गाजियाबाद-201005
उत्तर प्रदेश
मो. : 9818791434
editor@sadaneera.com

रचनाएं भेजने के लिए :
submit@sadaneera.com

सहयोग-सदस्यता

एक अंक के लिए : 100 रुपए, 5 डॉलर
संस्थाओं के लिए : 700 रुपए
वार्षिक सदस्यता : 500 रुपए
आजीवन सदस्यता : 10,000 रुपए

'सदानीरा' डाक से मंगाने के लिए सदानीरा के नाम संपादकीय पते पर चेक/ड्राफ्ट भेजें या देना बैंक (अरेरा कॉलोनी, भोपाल, IFSC : BKDN0811184) के करंट अकाउंट नंबर : 118411023949 में राशि जमा करके हमें ईमेल या फोन पर सूचित कर दें.
© सर्वाधिकार सुरक्षित. इस पत्रिका का कोई भी हिस्सा किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम, जिसमें सूचना संग्रहण और सूचना संसाधन की विधियां सम्मिलित हैं, द्वारा प्रकाशक अथवा संपादकों की पूर्वानुमति के बिना पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता सिवाय एक समीक्षक के जो समीक्षा में संक्षिप्त अंशों को उद्धृत कर सकता है. प्रकाशित कृतियों का कॉपीराइट लेखकों / अनुवादकों / कलाकारों का है. भेजी गई रचनाओं पर अगर सात दिन के भीतर कोई उत्तर नहीं मिलता, तब रचनाकार उन्हें अन्यत्र भेजने के लिए स्वतंत्र हैं. मुफ्त अंक और नमूना प्रति भेजने की सुविधा नहीं है, कृपया इस संदर्भ में कोई फोन, ई-मेल या पत्र-व्यवहार न करें. 'सदानीरा' की सदस्यताएं केवल प्रिंट इश्यू के लिए हैं. प्रिंट में अनुपलब्ध कुछ अंक डिजिटल फॉर्म में sadaneera.com के **पूर्व अंक** सेक्शन में हैं और वहां नि:शुल्क पढ़े और सहेजे जा सकते हैं.

माया दुबे अग्निमा स्मृति संस्थान के लिए प्रकाशित

क्रम

ग्रीष्म 2018

आ वा जें

शुरुआत 6
आग्नेय

स्पैनिश कविता 9
अंतोनियो पोर्चिया
अनुवाद और प्रस्तुति : मोनिका कुमार

पाठ 60
एडवर्ड हिर्श
अनुवाद : एकता

अंग्रेजी कविता 70
क्लाउडिया रैंकिन
अनुवाद और प्रस्तुति : यादवेंद्र
जिमी सांतियागो बका 74
अनुवाद और प्रस्तुति : उपासना झा

अरबी कविता 82
अल-सद्दीक अल-रद्दी
अनुवाद और प्रस्तुति : विपिन चौधरी

तुर्की कविता 87
जमाल सुरैया
अनुवाद और प्रस्तुति : निशांत कौशिक

उर्दू कविता 92
हुसैन हैदरी

100 **ग्राफिक गल्प**
प्रमोद सिंह

108 **चिट्ठियां**
सावजराज

118 **गुजराती कविता**
नीरव पटेल
अनुवाद : मालिनी गौतम

122 **हिंदी गद्य**
अनिल यादव
134 सिद्धांत मोहन
143 **हिंदी कविता**
प्रदीप अवस्थी

149 **तस्वीरें**
अलबर्ट ड्यूरर
प्रस्तुति : महेश वर्मा

155 **वृत्तांत**
ऋषभ श्रीवास्तव

160 **सौ शब्द**
अविनाश मिश्र

हमारा समय घड़ियों का समय नहीं है

आग्नेय

क्या लेखक और उसके लेखन को लेकर नैतिकता के प्रश्न उठाए जा सकते हैं? क्या लेखक का जीवन, उसके जीवन जीने का तरीका और उसके जीवन-यापन के साधनों के बारे में नैतिकता का कोई तारतम्य बन सकता है या बनाया जा सकता है? क्या लेखक के विरुद्ध समाज या जनता की अदालत में या राज्यसत्ता की किसी कचहरी में अभियोग-पत्र दाखिल किया जा सकता है? क्या लेखक और उसके लेखन से किसी भी प्रकार की कोई जवाबदेही और प्रतिबद्धता की आशा की जा सकती है? क्या लेखक की स्वायत्तता, उसके स्वाधीन बने रहने की आकांक्षा, उसके अराजक होने का अधिकार और उसके बहुरूपिया होने के अवसर को किसी तरह से भी सीमित करना लेखन के विरुद्ध चले जाना होगा?

ये सारे प्रश्न ऐसे हैं जिनके दो टूक जवाब देना और पाना कठिन है. सर्वमान्य उत्तर न पाने की विवशता होने के बावजूद साहित्य के संसार में ये सवाल अनेक बहसों के केंद्र में रह चुके हैं और अब भी केंद्र में हैं. यद्यपि कुछ लोग इन सवालों को गैरजरूरी समझकर और बताकर एक जरूरी बहस से दरकिनार हो जाना चाहते हैं. उनके साहित्यिक रोजनामचों में, उनके 'कभी-कभारों' में आत्मरतियों और आत्मप्रवचनों को इतना स्पेस दिया जाता है कि साहित्य के किसी जरूरी और बुनियादी सवालों पर बहस की गुंजाइश ही नहीं बचती है. ये

साहित्य-मनीषी अपनी आंखों से दूसरों की दुनिया देखने के लिए एक ऐसा मायालोक रचते हैं, जहां न तो नैतिकता के प्रश्न हैं, जहां न जवाबदेही है और न जहां नैतिक प्रतिबद्धताओं के लिए कोई स्पेस है. उनकी दुनिया में प्रलोभन, पद, सम्मान, सत्ता और राज्याश्रय सर्वाधिक कामना करने वाली चीजें हैं.

क्या एक लेखक को अपने जीवन के किसी मोड़ पर, किसी मुहाने पर, किसी मुकाम पर अपने आपसे यह प्रश्न नहीं पूछना चाहिए कि जीवन में ऐसा समय आ जाता है जब सारी भौतिक चीजें अपना वैभव, अपनी दिव्यता, अपनी महिमा खोने लगती हैं. क्या लेखक के जीवन में भी ऐसा समय आ गया है या आने वाला है? उसके बारे में उसे निश्चित होना है और ऐसे समय की प्रतीक्षा करनी है और जब ऐसा समय किसी लेखक के जीवन में आ जाता है तब वह अपने को रोकता नहीं है, अपने को ठिठकाता नहीं है, अपने को मना नहीं करता है.

लेखक को स्वाधीनता और स्वायत्तता उपहार या दान या राज्याश्रय में नहीं मिलती हैं, उसे जोखिम उठाकर, खतरों का मुकाबला करते हुए नैतिक साहस और आत्मिक बल से अर्जित करनी पड़ती हैं. नैतिक रूप से निर्भीक होना आतिशबाजी का खेल नहीं है. लेखक की नैतिकता, उसका प्रतिरोध और उसकी प्रतिपक्षता पिंजड़े में शेर की दहाड़ नहीं है. वह सूर्य की ओर उड़ने वाले परिंदे की उड़ान है, वह मुक्तिबोध की कविता है. वह अपने आपसे स्वाधीन होने का कर्म है, वह मार्क्स और एंगेल्स का कम्युनिस्ट घोषणा-पत्र है. वह सच्चे रूप में व्यक्ति के मानवीय होने की निर्णायक घड़ी है.

हीगल कहता है कि नैतिक मनुष्य वह नहीं है जो केवल सही काम करना चाहता है और करता है और न वह अपराध-बोध से मुक्त मनुष्य है, नैतिक मनुष्य वह होता है जो अपने द्वारा किए गए कर्म के प्रति चेतन रहता है.

यहीं एक लेखक दूसरे लेखक से यह सवाल पूछ सकता है कि क्या एक लेखक के रूप में हमारे पास ऐसे विकल्प हैं जो हमारे जीने और सोचने के ढंग और तरीकों को बदल सकें? यह हमारी सभ्यता का ही केंद्रीय प्रश्न नहीं है, एक लेखक के अस्तित्व से भी ताल्लुक रखता है. साहित्य स्वयं एक ऐसा विकल्प है जो लेखक को, उसकी अपनी दुनिया को बदलने की ताकत रखता है.

आखिर साहित्य का क्या काम है, वह क्या करता है या कर सकता है. एक लेखक को इसकी बखूबी पूरी जानकारी होती है. वह यह अच्छी तरह जानता है कि 'जीवन की धारा में ही शब्दों का अर्थ होता है' और लेखक को उसका लेखन दूसरों के खातिर जो बिना आशा के है, आशावान होने का संदेश देता है. साहित्य व्यक्ति के चारों तरफ लिपटी विभ्रमों की जंजीरों को तोड़ता है, वह विभ्रमों को छोड़ देने की मांग करता है, जिससे उन स्थितियों को समाप्त किया जा सके जिनको विभ्रमों की आवश्यकता होती है. कोई भी लेखक अपनी